The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 6 | June 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

जनपद पीलीभीत की साहित्यिक परम्परा में स्वामी नारायणानंद 'अख्तर' का योगदान

प्रशान्त मिश्रा

शोधार्थी, हिंदी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीसलपुर, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश

(महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली)

डॉ० पवन कुमार त्रिवेदी

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीसलपुर, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश

(महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.21470041

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 16-05-2026

Accepted: 22-06-2026

Published: 15-07-2026

Keywords:

पीलीभीत, स्वामी नारायणानंद 'अख्तर', जनपदीय साहित्य, साहित्यिक परम्परा, लोकसंस्कृति, हिन्दी साहित्य, सांस्कृतिक चेतना।

ABSTRACT

उत्तर प्रदेश का जनपद पीलीभीत प्राकृतिक संपदा, लोकसंस्कृति और साहित्यिक परम्परा की दृष्टि से विशिष्ट पहचान रखता है। इस जनपद ने हिन्दी, उर्दू तथा लोकसाहित्य को अनेक महत्वपूर्ण साहित्यकार प्रदान किए हैं। इन्हीं साहित्य-मनीषियों में स्वामी नारायणानंद 'अख्तर' का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। वे केवल कवि ही नहीं, बल्कि इतिहासबोध से संपन्न चिंतक, संगीत-रसिक, लोकसंस्कृति के संरक्षक तथा बहुआयामी साहित्यकार भी थे। उनकी साहित्य-साधना ने पीलीभीत की साहित्यिक परम्परा को व्यापक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य जनपद पीलीभीत की साहित्यिक परम्परा के विकास में स्वामी नारायणानंद 'अख्तर' के योगदान का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना है। इस अध्ययन में ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक शोध-पद्धति का उपयोग करते हुए उनके व्यक्तित्व, कृतित्व, साहित्यिक दृष्टि तथा सांस्कृतिक योगदान का विवेचन किया जाएगा। साथ ही यह भी स्पष्ट किया जाएगा कि उन्होंने स्थानीय लोकजीवन, सांस्कृतिक विरासत तथा साहित्यिक चेतना को किस प्रकार अपने लेखन का आधार बनाया और क्षेत्रीय साहित्य को व्यापक

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

हिन्दी साहित्य से जोड़ने का कार्य किया। यह अध्ययन इस निष्कर्ष की ओर संकेत करता है कि स्वामी नारायणानंद 'अख्तर' का योगदान केवल व्यक्तिगत साहित्य-सृजन तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने जनपदीय साहित्यिक परम्परा के संरक्षण, सांस्कृतिक मूल्यों के संवर्धन तथा साहित्यिक वातावरण के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका साहित्य स्थानीयता और सार्वभौमिकता के समन्वय का उदाहरण प्रस्तुत करता है। अतः पीलीभीत की साहित्यिक परम्परा के समुचित मूल्यांकन में स्वामी नारायणानंद 'अख्तर' का स्थान केंद्रीय एवं अविस्मरणीय है।

उत्तर प्रदेश का जनपद पीलीभीत केवल प्राकृतिक संपदा और सांस्कृतिक विविधता के कारण ही नहीं, बल्कि अपनी समृद्ध साहित्यिक परम्परा के कारण भी विशेष पहचान रखता है। तराई क्षेत्र में स्थित होने के कारण यहाँ विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और सामाजिक समूहों का सतत संपर्क रहा, जिसने इसकी साहित्यिक चेतना को बहुआयामी स्वरूप प्रदान किया। यहाँ हिन्दी, उर्दू तथा लोकभाषाओं की परम्पराएँ समानांतर रूप से विकसित हुईं और एक-दूसरे को समृद्ध करती रहीं।

पीलीभीत की साहित्यिक परम्परा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ साहित्य केवल अभिजात वर्ग तक सीमित नहीं रहा, बल्कि लोकजीवन, लोकगीत, धार्मिक आख्यान, सामाजिक अनुभव तथा सांस्कृतिक स्मृतियाँ भी साहित्यिक अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण आधार बनीं। इस जनपद के साहित्यकारों ने स्थानीयता को राष्ट्रीय साहित्यिक चेतना से जोड़ने का उल्लेखनीय प्रयास किया। फलस्वरूप यहाँ का साहित्य क्षेत्रीय होते हुए भी व्यापक भारतीय संवेदना का प्रतिनिधि बन सका।

गणेश शंकर शुक्ल द्वारा लिखित पीलीभीत का साहित्यिक इतिहास से ज्ञात होता है कि पीलीभीत में साहित्यिक गतिविधियाँ लंबे समय से सक्रिय रही हैं तथा अनेक कवि, लेखक और साहित्य-सेवी इस परम्परा को निरंतर समृद्ध करते रहे। इस साहित्यिक परिदृश्य में स्वामी नारायणानंद 'अख्तर', चंडी प्रसाद 'हृदयेश', राधेश्याम पाठक 'श्याम' तथा अंजुम पीलीभीती जैसे रचनाकारों का विशेष स्थान है।

पीलीभीत की साहित्यिक परम्परा का एक महत्वपूर्ण पक्ष इसका सांस्कृतिक समन्वय है। यहाँ हिन्दी और उर्दू साहित्य की समानांतर विकासधाराओं ने सामाजिक सौहार्द तथा सांस्कृतिक संवाद को सुदृढ़ किया। यही कारण है कि इस जनपद के अनेक साहित्यकारों की रचनाओं में भारतीय संस्कृति, मानवीय संवेदना तथा लोकजीवन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

इसी समृद्ध साहित्यिक वातावरण में स्वामी नारायणानंद 'अख्तर' ने अपनी रचनात्मक साधना का विस्तार किया। उन्होंने केवल साहित्य-सृजन ही नहीं किया, बल्कि जनपदीय सांस्कृतिक चेतना के संरक्षण और साहित्यिक अभिरुचि के विकास में भी सक्रिय भूमिका निभाई। उपलब्ध विवरण उन्हें **संगीतज्ञ, कवि, साहित्यकार और इतिहासकार** के रूप में भी रेखांकित करते हैं, जिससे उनके व्यक्तित्व की बहुआयामी प्रकृति स्पष्ट होती है।

स्वामी नारायणानन्द 'अख्तर' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व (प्रारम्भिक रूप)

स्वामी नारायणानन्द सरस्वती 'अख्तर' का जन्म विक्रम संवत् 1963 में उत्तर प्रदेश के जनपद पीलीभीत में हुआ। उनके पिता पंडित लक्ष्मीनारायण देव तिवारी थे। पारिवारिक वातावरण धार्मिक एवं सांस्कृतिक था, जिसने उनके व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाल्यकाल से ही उनमें संगीत, विशेषतः लावनी-गायन के प्रति स्वाभाविक अनुराग था। यही रुचि आगे चलकर उनके साहित्यिक और सांगीतिक व्यक्तित्व की आधारशिला बनी।

उनके आत्मवृत्तात्मक विवरण से ज्ञात होता है कि बाल्यावस्था में वे स्थानीय लावनी गायकों के सम्पर्क में आए और बाद में इसी विधा के व्यवस्थित अध्ययन हेतु कानपुर गए। वहाँ उन्होंने लावनी परम्परा का गहन अभ्यास किया तथा उसे केवल गायन तक सीमित न रखकर साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। उनके अनुसार लावनी केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि लोकसंस्कृति और काव्य परम्परा का सशक्त रूप है।

स्वामी नारायणानन्द का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे साहित्यकार होने के साथ-साथ संगीतज्ञ, समाजसेवी, शिक्षाविद् तथा सांस्कृतिक आयोजक भी थे। उन्होंने पीलीभीत में वैदिक शिक्षा के प्रसार के उद्देश्य से एक वैदिक विद्यालय की स्थापना एवं संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इससे स्पष्ट होता है कि उनकी दृष्टि केवल साहित्य-सृजन तक सीमित नहीं थी, बल्कि समाज के सांस्कृतिक और शैक्षिक विकास तक विस्तृत थी।

उनकी प्रमुख कृतियों में *लावण्यलता* तथा *लावनी का इतिहास* विशेष उल्लेखनीय हैं। *लावनी का इतिहास* हिन्दी साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ माना जा सकता है, क्योंकि इसमें लावनी की परम्परा, विकास और स्वरूप का व्यवस्थित विवेचन किया गया है। वहीं *लावण्यलता* उनकी रचनात्मक प्रतिभा, लोक-संवेदना और काव्य-कौशल का परिचय देती है। इन रचनाओं में भाषा सहज, भावाभिव्यक्ति प्रभावपूर्ण तथा लोकजीवन के प्रति गहरा लगाव दिखाई देता है।

स्वामी नारायणानन्द ने हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में भी सक्रिय योगदान दिया। उपलब्ध विवरणों से ज्ञात होता है कि वे **'कविन्द्र'** नामक पत्रिका के सम्पादन से भी जुड़े रहे। यह कार्य उनकी साहित्यिक सक्रियता और संगठनात्मक क्षमता का प्रमाण है। उन्होंने साहित्य को समाज-निर्माण का माध्यम माना और अपने लेखन के साथ-साथ सांस्कृतिक गतिविधियों द्वारा भी जनजागरण का प्रयास किया।

स्वामी नारायणानन्द 'अख्तर' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

स्वामी नारायणानन्द सरस्वती 'अख्तर' जनपद पीलीभीत की साहित्यिक परम्परा के उन विरल साहित्यकारों में हैं, जिनके व्यक्तित्व में साहित्यकार, लोकसाहित्य-संग्राहक, क्रांतिकारी चिंतक, पत्रकार, संगीत-विशारद, समाजसेवी तथा सांस्कृतिक संगठक के विविध आयाम एक साथ समाहित दिखाई देते हैं। उनका साहित्य केवल काव्य-सृजन तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें राष्ट्रीय चेतना, लोकजीवन, सांस्कृतिक अस्मिता तथा जनजागरण का व्यापक स्वर विद्यमान है। इस दृष्टि से वे बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक दौर के उन साहित्यकारों में गिने जा सकते हैं जिन्होंने साहित्य को समाज और राष्ट्र की चेतना से जोड़ा।

स्वामी जी का जन्म पीलीभीत में हुआ। प्रारम्भिक जीवन से ही उनमें संगीत और लोककाव्य के प्रति गहरी रुचि थी। विशेष रूप से **लावनी** विधा ने उन्हें अत्यधिक आकर्षित किया। उन्होंने कानपुर जाकर लावनी-परम्परा का गंभीर अध्ययन किया और उसके ऐतिहासिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक पक्षों को समझने का प्रयास किया। आगे चलकर उन्होंने इस विधा को केवल लोकगायन के रूप में नहीं, बल्कि हिन्दी साहित्य की एक महत्वपूर्ण काव्य-परम्परा के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया।

स्वामी नारायणानन्द 'अख्तर' का साहित्यिक व्यक्तित्व अत्यंत बहुआयामी था। वे कवि होने के साथ-साथ लोकसाहित्य के मर्मज्ञ अध्येता भी थे। उन्होंने लोकगीतों, लावनियों तथा जनपदीय सांस्कृतिक परम्पराओं का संरक्षण किया और उन्हें साहित्यिक गरिमा प्रदान की। उनकी विशाल कृति **'लावण्यलता'** इस संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय है। इसका प्रथम प्रकाशन सन् **1972** में हुआ। बाद में **डॉ. शम्भू शरण शुक्ल**, जो उपाधि महाविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक रहे, ने इसका संपादन कर **2007** में पुनर्प्रकाशित कराया। यह पुनर्प्रकाशन केवल एक पुस्तक का पुनर्मुद्रण नहीं था, बल्कि स्वामी जी की साहित्यिक विरासत को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण प्रयास भी था।

स्वामी जी का रचनात्मक संसार केवल लोकसाहित्य तक सीमित नहीं था। उनकी कविताओं में राष्ट्रीय स्वाधीनता, स्वदेशी चेतना और क्रांतिकारी विचारधारा का भी सशक्त स्वर मिलता है। उनकी प्रसिद्ध पंक्तियाँ—

"चाल धीमी है तो क्या हुआ, आएगी मंज़िल ज़रूर;
खौफ़ गिर जाने का भी तो तेज़ रफ़्तारी में है।"

—उनके जीवन-दर्शन, धैर्य और संघर्षशील व्यक्तित्व का परिचय देती हैं। यह कथन केवल प्रेरणात्मक नहीं, बल्कि उनके संपूर्ण साहित्यिक और सामाजिक जीवन का प्रतिनिधि सूत्र भी प्रतीत होता है।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वामी नारायणानन्द 'अख्तर' ने साहित्य को राष्ट्रीय जागरण का माध्यम बनाया। उन्होंने **'स्वदेशी गान'**, **'आज़ादी या मौत'** जैसी क्रांतिकारी रचनाएँ लिखीं, जिनमें ब्रिटिश शासन के विरुद्ध स्पष्ट

प्रतिरोध का स्वर मिलता है। औपनिवेशिक सरकार ने इन रचनाओं को राजद्रोहात्मक मानते हुए **जब्त** कर लिया। उनकी राष्ट्रवादी गतिविधियों के कारण उन्हें **कारावास** भी भोगना पड़ा। इससे स्पष्ट होता है कि वे केवल लेखनी के माध्यम से ही नहीं, बल्कि अपने जीवन के स्तर पर भी स्वतंत्रता संग्राम के सक्रिय सहभागी थे।

पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उनका योगदान उल्लेखनीय है। उन्होंने **कानपुर** से **'कविन्द्र'** नामक साहित्यिक पत्र का प्रकाशन एवं संपादन किया। इस पत्र के संचालन में उनके परम मित्र और हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि **गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही'** की महत्वपूर्ण भूमिका रही। 'कविन्द्र' ने तत्कालीन हिन्दी साहित्य, राष्ट्रीय चेतना तथा नवोदित साहित्यकारों को एक मंच प्रदान किया और अपने समय की साहित्यिक पत्रकारिता में विशिष्ट स्थान बनाया।

स्वामी नारायणानन्द 'अख्तर' केवल लेखक नहीं, बल्कि एक कुशल **साहित्य-संगठक** भी थे। **सन् 1925 के कानपुर कांग्रेस अधिवेशन** के अवसर पर आयोजित **प्रथम अखिल भारतीय कवि सम्मेलन**, जिसकी अध्यक्षता **गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही'** ने की थी, उसके प्रमुख **व्यवस्थापक और सूत्रधार** स्वामी जी ही थे। यह तथ्य उनकी संगठनात्मक क्षमता तथा हिन्दी साहित्यिक जगत में उनके व्यापक सम्मान का प्रमाण है।

उनका स्वभाव अत्यंत **घुमक्कड़** था। वे विभिन्न क्षेत्रों की यात्राएँ करते, लोकगायकों, कवियों और सांस्कृतिक परम्पराओं का अध्ययन करते तथा उन्हें अपने साहित्य में स्थान देते थे। यही कारण है कि उनके साहित्य में लोकजीवन का प्रामाणिक स्वर, सांस्कृतिक विविधता और भारतीयता का व्यापक बोध मिलता है। उन्होंने जनपदीय संस्कृति को राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना से जोड़ने का कार्य किया, जो उनके साहित्यिक अवदान का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है।

इस प्रकार स्वामी नारायणानन्द 'अख्तर' का व्यक्तित्व केवल एक साहित्यकार का नहीं, बल्कि **राष्ट्रभक्त, लोकसंस्कृति के संवाहक, साहित्यिक पत्रकार, सांस्कृतिक आयोजक और जनपदीय साहित्य के इतिहास-निर्माता** का व्यक्तित्व है। पीलीभीत की साहित्यिक परम्परा के विकास में उनका योगदान बहुआयामी, स्थायी और ऐतिहासिक महत्व का है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि स्वामी नारायणानन्द सरस्वती 'अख्तर' जनपद पीलीभीत की साहित्यिक परम्परा के उन विशिष्ट साहित्यकारों में हैं, जिन्होंने अपने बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व के माध्यम से न केवल क्षेत्रीय साहित्य को समृद्ध किया, बल्कि हिन्दी साहित्य, लोकसंस्कृति और राष्ट्रीय चेतना के विकास में भी उल्लेखनीय योगदान दिया। उनका साहित्य जनपदीय जीवन, लोक परम्परा, सांस्कृतिक मूल्यों और राष्ट्रप्रेम का सशक्त दस्तावेज़ है। स्वामी जी ने लावनी जैसी लोकविधा को साहित्यिक गरिमा प्रदान करते हुए उसके ऐतिहासिक

एवं सांस्कृतिक स्वरूप को संरक्षित किया। उनकी कृति *लावण्यलता* इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है, जो लोकसाहित्य के संरक्षण और संवर्धन का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। साथ ही उन्होंने पत्रकारिता, साहित्यिक संगठन और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार में भी उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

यह भी स्पष्ट होता है कि स्वामी नारायणानन्द 'अख्तर' के साहित्य और व्यक्तित्व का समुचित मूल्यांकन अभी तक हिन्दी साहित्य के इतिहास में अपेक्षित स्तर पर नहीं हो पाया है। उनके साहित्य, पत्रकारिता, लोकसाहित्य-संग्रह और स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान पर गंभीर अकादमिक शोध की अभी भी पर्याप्त संभावनाएँ विद्यमान हैं। विशेष रूप से उनकी अप्रकाशित अथवा दुर्लभ रचनाओं, पत्राचार और समकालीन साहित्यकारों के साथ उनके संबंधों का अध्ययन हिन्दी साहित्य के इतिहास में नए आयाम जोड़ सकता है।

सन्दर्भ -

1. महेश गुप्त,)2000). पीलीभीत जनपद का लोकसाहित्य. बरेली
2. स्वामी नारायणानन्द सरस्वती 'अख्तर', (2007), *लावण्यलता* (सं .डॉ .शम्भू शरण शुक्ल .(पीलीभीत :मंजुश्री प्रकाशन.
3. स्वामी नारायणानन्द सरस्वती 'अख्तर', *लावनी का इतिहास*
4. गणेश शंकर शुक्ल,) 1957) *पीलीभीत का साहित्यिक इतिहास.* पीलीभीत.
5. सं .डॉ .शम्भू शरण शुक्ल, चंडी प्रसाद हृदयेश - स्मृति ग्रन्थ, पीलीभीत